ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 14 July 2020

कोराना, आर्थिक सामाजिक चुनौतियाँ एवं आर्थिक विकासः एक परिदृश्य

डॉ. अनूप प्रधान

वाईस चान्सलर, सनराईज विश्वविद्यालय , अलवर

डॉ. ऋचा सिंघल

सह–आचार्य,

एस.एस.जैन सुबोध पी जी कॉलेज महाविद्यालय, जयपुर

''वसुदेव कुटुम्बकम्'' की पृष्ठभूमि वाले भारत ने कोविड 19 में भी राष्ट्रीय के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय/वैश्विक उत्तरदायित्व को बखूबी निभाया। कोविड 19 के इस सम्पूर्ण परिदृश्य में भारत की प्रतिक्रिया उसकी राजनीतिक इच्छा शक्ति और पड़ौस में अपने हितों की रक्षा की क्षमता को पूर्णतः रेखांकित करती है। जहाँ भारत ने 75 करोड़ रू. से सार्क कोविड 19 इमरजेंसी फन्ड स्थापित किया वहीं मेडिकल सामान की सीमित उपलब्धता की चिन्ता के बावजूद टनों जरूरी मेडीकल सामान चीन सहित अनेक देशों यथा पश्चिम एशिया, मध्य एशिया, दक्षिण अमेरिका, ब्रिटेन और अमेरिका को भेजा। भारत ने विदेशों में फंसे अपने व अन्य देशों के नागरिकों को निकालने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा अपनी स्वच्छ वैश्विक व देशीय राजनैतिक प्रतिबद्धता का परिचय दिया है।

कोरोना की वैश्विक उत्पत्ति से जहाँ वैश्विक आर्थिक, वैश्विक सहयोग, वैश्विक स्वास्थ्य, वैश्विक मैडीसन, वैश्विक राजनीति आदि सभी पक्षों में परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं वही राष्ट्रीय स्तर पर लॉक डाऊन के रहते कोरोना संक्रमण के भय के साथ–साथ आर्थिक उत्पादन, सेवाओं व्यापार सभी के रूक जाने ने, एक संकट पैदा कर दिया है। आज पुनः मन्थन करने व सीखने का समय है।

कोविड 19 चाहे चीन की उल्टी पड़ी सोची समझी चाल हो या प्राकृतिक प्रकोप किन्तु इसके चंगुल से पूरी तरह मुक्ति में अभी समय लगेगा। किन्तु भारत में इस महामारी को रोकने में जन भागीदारी व्यर्थ नहीं जाएगी। इस बीच व इसके पश्चात न जाने मानव व्यवहार, सोच, जीवन प्रणाली और जीवन के प्रति दृष्टिकोण में कितने ही परिवर्तन आऐगें। कोरोना से बदली दुनिया में कुछ निराशा के साथ एक रोमांच भी होगा। किन्तु ध्यान रखना होगा कि लॉकडाउन पूरी तरह खत्म होते ही भारतीय जनता देश को ''कॉशन फटीग'' का शिकार न बना दे।

त्वरित राजस्व के लिये शराब की दुकाने को मुँह चिड़ाती लम्बी कतार और दूसरी की बिक्री शुरू कर सकती है तो हम तो अधिक जरूरी है। पुलिस तो शराब की और सरकार भूल गई कि पुलिस नहीं आ जाऐंगे। क्या मजदूरो, कामगारों, तुरन्त प्रभाव से रोका नहीं जाना चाहिए

खोलना, इससे एक तरफ सोशियल डिस्टेंन्सिग तरफ मजदूरो को लगा कि यदि सरकार शराब अपने घर जाना चाहते है, जो शायद शराब से खरीददारों को व्यवस्थित करने में लगा दी गई होगी तो लाखों मजदुर वर्गीय लोग सड़क पर हमारे जीवन को सरल बनाने वाले के प्रवास को था। उनको खाने व जरूरी आवश्यकताओं का

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 14 July 2020

प्रबंधन करे। देश के संविधान के मार्गदर्शक सिद्धांत में शराब पीने की मना ही के रहते पहले दिन राजस्थान विधान सभा में शराब दुकान खोलने की तरफदारी और, दूसरे–तीसरे दिन खोल खोल देना। आम जन मानस में एक प्रश्न पैदा होना स्वाभाविक था कि कोरोना सकंट में क्या शराब की दूकाने खुला जाना इतना अनिवार्य है? जबकि देश में मात्र शराब से रोजाना 700 मौत होती है। जवाब यदि राज्य के आय के स्रोत और आर्थिक मजबूरियों का कोरोना काल में बढ़ जाना है तो राज्य की आय के स्रोत जी एस टी, पैट्रोल–डीजल, स्टांप ड्यूटी आदि से होने वाली आय का क्या?

घोषणाओं के सही एवं वास्तविक विश्लेषण में निष्पक्ष अर्थ शास्त्रियों को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। सामान्य नागरिक का विश्वास जीतने के लिए आवश्यक है कि 20 लाख करोड़ के पैकेज से सभी सेक्टर्स की सहायता का ब्यौरा तो आकर्षक लग रहा है कि देश की अर्थ व्यवस्था की नगदी का संकट दूर हो जाऐगा किन्तु इसकी सफलता इसके क्रियान्वयन पर निर्भर करती है जिसके लिए सम्बन्धित विभागों एवं अधिकारियों की जवाबदेही तय करनी अति आवश्यक है। जिससे सहायता हकदार के पास ही और निश्चित रूप से पहुँचे। तभी सामान्य नागरिक की विश्वास जम सकेगा। घोषणाओं की जटिल भाषा, आधार एवं शर्तों को सामान्य व्यक्ति नहीं समझ पाता। ऊपर से 20 लाख करोड़ के पैकेज में पुरानी योजनाओं का समाहन कर 7.79 लाख करोड़ की गणना, किसानों को तात्कालिक लाभ की घोषणाओं की कमी, राहत के स्थान पर कर्जा देने की कवायत आदि ऐसे मुद्दे हैं जो चाह कर भी 20 लाख करोड़ का इतना बड़ा पैकेज भी प्रसन्नता नहीं दे पा रहा है।

भारत के समक्ष सकंट कालीन चुनौतियाँ

कोविड 19 के कारण लॉक डाउन से भारत की अर्थ व्यवस्था में सबसे अधिक योगदान (लगभग 55 प्रतिशत) देने वाले सर्विस सेक्टर की गतिविधियों में कमी आने से पी.एम.आई. कम्पोजिट इन्डेक्स में भारी कमी आई है। आई एस मार्केट इण्डिया सर्विसेस बिजनेस एक्टीविटी इंण्डेक्स अप्रैल 2020 में भारी गिरावट के साथ 5.4 पर आ गया। जो मार्च 2020 में 49.3 था। इसी तरह कम्पोजिट पी.एम.आई आउटपुट इण्डेक्स भी 50.6 से घट कर 7.2 पर आ गया। इसका सीधा प्रभाव जी.डी.पी. पर पड़ेगा। किन्तु देश की पहली महत्त्वपूर्ण आवश्यकता जन जीवन है। जन जीवन रहा तो देश अपनी आन्त्रोप्रिन्योअरशिप और रचनात्मक कौशल के रहते इसे सन्तुलित कर लेगा।

- सरकार के सम्मुख विस्तृत आर्थिक चुनौतियां आ खड़ी हुई है। एक तरफ आत्म निर्भर भारत का सपना और दूसरी तरफ लॉकडाउन के परिणाम स्वरूप छोटे मझौले व्यवसायों के सम्मुख अस्तित्व रक्षण का प्रश्न बहुत बड़ी चुनौती सा दिखाई दे रहा है। चुनौतियों से निबटने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा विस्तृत प्रयत्न किये जा रहे है तथा 20 लाख करोड़ के पैकेज से 10 करोड़ सेवाकर्मियों को लाभ देने का मास्टर प्लान है जिसमें एम एस एम ई सेक्टर में कार्यरत कर्मियों को 1.20 करोड़, टेक्सटाइल से जुड़े 4.5 करोड़ और पर्यटन होटल उद्योग से जुड़े 3.8 सेवाकर्मियों को मदद देने का प्रावधान किया। सरकार की यह सोच बेहतर नवीन विकल्पों के साथ नवीन सम्भावनाओं को विकसित करने में सहायक होगी।
- नेशनल हैल्थ पोलिसी 2025 का लक्ष्य प्राप्त करना दूभर हो रहा है। देश की स्वास्थ्य दशा बयान कर रही है कि प्रतिवर्ष जन्म के 144 घण्टे में 4.56 लाख और पाँच वर्ष तक के 10.4 लाख बच्चों की मौत के पीछे जन्मजात बीमारियों के साथ माँ के शरीर में खून

2

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 14 July 2020

की कमी है। यह रिपोर्ट इण्डियन कांउसिल ऑफ मेडीकल रिसर्च और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग व अन्य संस्थाओं ने तैयार की है। जिसमें 2017 के आँकड़ों की 2000 के आँकड़ों से तुलना की गई है। (भास्कर 13 मई 2020)

- अपराध के बदलते स्वरूप ई क्राईम, साइबर क्राईम, इनटरनेट पर गेम्बलिंग और पोर्न, आदि की बढ़ती प्रवृति मात्र देश नहीं वरन वैश्विक स्तर पर चुनौती स्वरूप विकसित हो रही है।
- लाकडाउन में हो रही शादियों में उपहारों के लेने देने में संकल्प पत्र जैसी उभरती प्रवृत्ति मन मुटाव और तलाक की स्थिति में आपसी शोषण का मुद्दा बन जाएगा। (भास्कर 7/5/20)
- अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर ग्लोबलाइजेशन पर संकट – भारत की भांति अमेरिका और यूरोप के कई देशों द्वारा आत्मनिर्भरता पर जोर देने के कारण ग्लोबलाइजेशन पर संकट गहराता दिखाई दे रहा है। खुले व्यापार, बेरोकटोक अन्तर्राष्ट्रीय आवाजाही, व्यापार नियमों में कठोरता, अमेरिका का अपने फेडरल पेंशन फंड को चीनी शेयर खरीदने से मना करना और ऐसे कितने ही उदाहरण है जो ग्लोबलाइजेशन पर गहराते संकट के संकेत दे रहे है। इससे विभाजित दुनिया के लिए ग्लोबल समस्याओं का हल खोजना कठिन होगा।

सम्भावनाएँ

- व्यवसाय में विस्तृत परिवर्तन आयेगें**।** बड़ा बिजनेस प्राइवेट लिमिटेड के फांउनडर व सी.ई.ओ डॉ विवेक बिन्द्रा लिखते है कि अब बिजनेस मॉडल बदलेगा, ऑटोमेशन एवं रिमोट वर्किंग का चलन बढेगा।
- आई टी एक्सपर्ट डी. बी. एम के प्रोफेसर डॉ. रूस्तम बोरा का कहना है कि आई टी क्षेत्र में और सम्भावनाऐं उभरेंगी। बहुत से टेक्नीकल फील्ड जैसे विडियो कान्फ्रेसिंग सोल्युशंस डाटा, सिक्युरिटी सोल्युशन, प्राइवेसी सोल्यूशंस, डाटा स्पीड एवं वेब साइड डवलपमेंट एवं मोबाईल एवं डवलपमेंट में नए व्यावसायिक अवसर जन्म लेंगें। व्यवसाय में वी आर और ए आर (वर्चुअल रियेलिटी एवं ऑग्मेंटेड रियेलिटी) का इस्तेमाल सभी क्षेत्रों में देखा जा सकेगा। वर्चुअल कार्य पद्धति, वर्चुअल लर्निंग, वर्चुअल मीटिंग्स, वेबीनार्स, टेली मेडीसन पद्धति आदि के प्रचलन से जहाँ एक तरफ बचत की विस्तृत सम्भावनाएँ बनेंगी वहीं दूसरी तरफ व्याध्यता से ही सही परम्परागत समाज भी डिजिटल इण्डिया युग में आगे कदम बढ़ायेगा। इस वर्ष देश में 30 प्रतिशत टेली मैडीसन बाजार बढ़ने का अनुमान है।
- वर्चुअल फिल्म मेकिंग में नए आयाम विकसित होगें। परिणाम स्वरूप छोटे बजट की एवं एनिमेटेड फिल्मस् का प्रचलन बढ़ेगा। अप्रैल में स्ट्रीमिंग प्लेटफार्म पर आई एनिमेटेड फिल्म 'ट्रोल्स वर्ल्ड टूर' से यूनिवर्सल स्टूडियो ने शुरूआती 3 महिनों में ही 760 करोड़ रू. कमा लिये।
- ऑक्यूलस रिफ्ट होलोलेंस जैसे वी आर हेडसेट जैसे नये उपकरणों का बाजार गर्म होगा। गोल्डमेन सेक्स ग्लोबल इनवेस्टमेन्ट रिर्सच के मुताबिक दुनिया में विभिन्नता पूर्ण उपयोगिता के कारण ए. आर. बी. आर साफ्टवेयर का बाजार 2025 तक 2.62 लाख करोड़ रूपये का हो जायेगा। (भास्कर 29 अप्रैल),

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 14 July 2020

- भारतीय शेयर बाजार में वैश्विक विश्वास तुलनात्मक रूप से अधिक रहेगा। सरकार द्वारा भारतीय सेवा कम्पनियों में एफ.डी.आई. को 49 प्रतिशत से 74 प्रतिशत बढ़ा देने का भारतीय बाजार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में स्थिर गिरावट कम ही रहेगी। इन परिवर्तित परिस्थितियों के कारण मानव सोच में परिवर्तन आज की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता के रूप में देखी जा सकती है। हमें फिर से मंथन कर नवीन परिस्थितियों में एक नवीन जीवन पद्धति को नियोजित करना होगा।
- वर्क फ्रोम होम और बच्चों के लिए घर पर आया है बुलाने के स्थान पर वर्चुअल बेबी सिटिंग के एक उभरते नए व्यवसाय के रूप देखा जा रहा है। न्यूयार्क की ग्रेडॉट कॉम की तर्ज पर भारतीय आन्त्रोप्रिनोअर्स, द्वारा वर्चुअल बेबी सिटिंग एवं बर्चुअल बेबी सिटर्स उपलब्ध कराने की दिशा में नई व्यावसायिक सम्भावनाएँ दिखाई दे रही है। ये जूम या बर्चुअल बेबी सिटर्स बच्चों की देखभाल, उनकी पढ़ाई और जिम्मेदारियों से माता–पिता को कुछ हद तक राहत दिला देते हैं। न्यूयार्क में सिर्फ एक माह से बर्चुअल बेबी सिटर्स की 700 प्रतिशत भाँग का बढ़ने से भारतीय आन्त्ररप्रिन्योअर्स भी इस क्षेत्र में बढ़ते व्यवसाय अवसरों की तरफ आकर्षित होगें।
- कोविड़ 19 के रहते घरेलू काम काज करने वालों की रोजी रोटी प्रभावित होगी। संक्रमण के डर से सम्भव है लोग साप्राहिक तौर उदारता पर ही घरेलू कामकाज या सफाई कार्यों में घरेलु काम करने वालों की मदद लें। इससे ये वर्ग अपनी रोजी रोटी कमाने के लिये अन्य व्यवसायों की तरफ प्रवृत्त होंगे।
- कोरोना काल में भारतीय नागरिकों द्वारा प्रदर्शित अनुशासन और दृढ़ता के परिणाम स्वरूप भविष्य में भारत में किसी भी महामारी के प्रसार की सम्भावनाओं में निश्चित ही कमी आएगी। आज अमेरिका जो तुलनात्मक रूप से अधिक हाइजनिक आदतों का पालन करने वाला माना जाता रहा है, को भारतीय जनता ने सोशियल डिस्टेंन्सिंग एवं मास्क प्रयोग जैसी सुरक्षा प्रविधियों का विस्तृत प्रयोग कर स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अच्छा परिचय दिया है। हमारी सरकार एवं प्रशासन ने भी मानव मूल्य के सम्मुख आर्थिकी को दूसरे पायदान पर ही रखा। भावना रही कि 'जान है तो जहान है।'
- प्रकृति से जुड़ाव बढ़ने के साथ–साथ 'ग्रो बैग्स' जैसी योजनाओं को प्रमुखता से देखा जाएगा। जयपुर नगर निगम नें 2016 में छतों पर ग्रो बैग्स में खेती करने को लेकर कुछ उपनियम बनाने का प्रस्ताव रखा था। कोरोना वायरस के बाद भी, किचन गार्डन को एक नया स्वरूप मिलेगा। इससे किचन गार्डन किट बेचने वाले भी तेजी से बढ़ेंगे।
- कोविड 19 के इस दौर में एजुकेशन के ट्रेडीशनल पैरामीटर्स पूरी तरह बदल जाऐगें। अब टीचिंग नहीं ट्रेनिंग चलेगी। इंसान और मशीन एक दूसरे के पूरक होंगे। वेबीनार्स इसी बदली सूरत की एक बानगी है। शिक्षा प्रणाली पारम्परिक से वर्चुअल और वर्चुअल में नवीन विधियों के निरन्तर विकास की सम्भावनाएँ बढ़ रही है। जिसमें शिक्षा उद्योग भी रहेगा और उसकी वास्तविक जीवन से सम्बद्धता भी बढ़ेगी।
- वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा राहत पैकेज के पाँचवे भाग में शिक्षा एक से लेकर 12 तक पृथक–पृथक चैनल चलाने की घोषणा, दिव्यागों के लिए ऑन लाइन कार्यक्रमों, टॉप 100 विश्वविद्यालयों में अनेक ऑनलाइन कोर्सेस चलाने की घोषणा एक नवीन शैक्षणिक परिदृश्य के उद्भव व विकास का योजनाबद्ध सरकारी प्रयास है।

Copyright @ 2020 Authors

- परिवर्तित परिस्थितियों के कारण सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन के तौर–तरीकों में परिवर्तन को भी परम्परागत मानव सोच में स्थान मिलने की सम्भावनाएँ बन रही है। फिर वो गृह कार्य की व्यवस्था हो या फिर शादी जैसे सामाजिक धार्मिक आयोजन।
- जन मानस में मानसिक तनाव के बढ़ने की आशंका को सिरे से नकारा नहीं जा सकता। वैसे तो कठिन परिस्थितियों में जीने की क्षमता रखने वाला आम भारतीय 'हैप्पीनेस थेरेपी' को अपना कर मनोवैज्ञानिक दबाव (Mental Stress)को कम करना बखूबी जानता है। राहत कोष के पाँचवे चरण में विद्यार्थियों व उनके परिवारों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए मनोदर्पण कार्यक्रम इसी दिशा में एक सरकारी प्रयास है।

सुझाव

- देश को आत्म निर्भर बनाने के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता स्वदेशी डिजिटल ढाँचा विकसित करने की है। उभरती चुनौतीयो सें निपटने के लिए योजनाबद्ध कार्य करना होगा। आज यदि सरकार सकारात्मक तरीके से काम करे तो आई टी, फार्मा और हैल्थ केयर ऐसे बड़े क्षेत्र हैं जिनमें असीम भर्ती रोजगार देने वाली सम्भावनाएं दिखाई दे रही है किन्तु इसके लिए जहां एक तरफ सरकार को हैल्थ केयर पर खर्च बड़ाना होगा वहीं दूसरी तरफ सरकार की आर्थिक सीमाऐं रहते प्राइवेट सेक्टर को भी इसमें मोटा निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।
- आम आदमी के जीवन एवं आर्थिक गतिविधियों को पुनर्जीवित करने के लिए एक सहयोगी राष्ट्रीय व वैश्विक अर्थव्यवस्था के मॉडल को विकसित करना होगा।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गैर राजनीतिक सदस्यों एवं वैज्ञानिकों को शामिल करते हुए "थिंक टैंक टीमों" की रणनीति पर काम करना होगा।
- हमें पॉज़ेटिव (कोरोना) पर पॉज़ेटिव' रहना होगा। भय में नही वरन् हमें सावधानी से जीने व काम पर लौटना होगा।
- देशीय संगीत व मनोरंजन के क्षेत्र में विकास की असीम सम्भावनाएँ मौजूद है किन्तु हमें लोकल के लिये वोकल बनना होगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'आज हमारे पास साधन हैं, सामर्थ्य है, सबसे बेहतरीन टैलेंट है, हम बेस्ट प्रोडेक्ट बनाऐगें अपनी क्वालिटी और बेहतर करेंगें, सप्लाई चैन को आधुनिक बनाऐगें' विचारों पर देशवासियों ने दृढ़ता से अमल किया तो 'मेड इन इण्डिया' को विकास पथ पर बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता।

उभरते वैश्विक परिदृश्य में भारत

अमेरिका और चीन दो महाशक्तियों के बीच गहराता कोरोना टकराव और हिचकौले लेते नरम गरम राजनीतिक आर्थिक सम्बन्ध किसी से छिपे नहीं है और अब तो अमेरिका संसद में चीन पर प्रतिबन्ध सम्बन्धी बिल लाकर चीन को खुली चेतावनी दे रहा है। इस बिल के द्वारा अमेरिकी प्रशासन अमेरिका में स्थित चीन की सम्पत्तियाँ सील करने, चीन पर यात्रा प्रतिबन्ध लगाने, चीनी नागरिकों का वीज़ा रद्द करने, वित्त संस्थाओं द्वारा चीनी कम्पनियों को कर्ज न देने, चीनी कम्पनियों को अमेरिकी शेयर बाजार से बाहर करने आदि की तैयारी कर रही है। अब नहीं लगता कि चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियान की बिल को अनैतिक साबित करने और अमेरिका के व्यापार सौदों को लागू

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 14 July 2020

करने की मंशा पूरी होगी। चीन अन्तर्राष्ट्रीय विश्वास खोता जा रहा है। अमेरिका की फार्मा एवं मेडिकल उपकरण बनाने वाली कम्पनियों का उत्पादन यूनिट्स चीन से भारत में शिफ्ट करने के लिए भारतीय मिशन से सम्पर्क साधना इसी की एक बानगी है। अमेरिका की भांति कोरिया, जापान आदि आम देश भी चीन पर निर्भर नहीं रहना चाहते हैं। वैश्विक व्यापार परिदृश्य में भारत को एक अट्रैक्टिव डेस्टीनेशन के रूप में देखा जा रहा है।

अनेक कम्पनियों ने भारत में उत्पादन यूनिट्स लगाने हेतु यू एस इण्डिया बिजनेस काउंसिल के जरिये केन्द्र को प्रस्ताव भेजे हैं।

जापान ने भी चीन से अपना उत्पादन आधार बदलने में मदद के लिये कम्पनियों को 2 अरब डॉलर का पैकेज देने की घोषणा की है।

मोबाईल, इलेक्ट्रोनिक्स, रोबोटिक्स, टैक्सटाइल, सेक्टर्स की 400 कम्पनियाँ भारत आना चाहती हैं।

भारतीय बाजार की क्षमता में विदेशी आर्थिक महारथियों के विश्वास का एक बड़ा उदाहरण है कि मार्च 2020 में 3,36,294 करोड़ के बड़े कर्ज को वहन कर रही जिओ प्लेटफॉर्म्स आज भी इतने आकर्षक लगते हैं कि लॉक डाउन के चलते मात्र 25 दिनों में चार बड़ी डील कर के 17.12 प्रतिशत हिस्सेदारी बेचकर 78,561.75 करोड़ रूपये जुटाने में सक्षम रही। सम्भवतः यह एक ऐतिहासिक प्रघटना है।

22 अप्रैल फेस बुक (अमेरिका)	= 9.99% (43,574)रू. करोड़ो में
4 मई अमेरिकी प्राइवेट इक्विटी फंड, सिल्वर लेक	= 1.15% (5,655.75)
8 मई अमेरिकी कम्पनी विस्टा इक्विटी पार्टनर्स	= 2.32% (11,367)
जनरल एटलांटिक	= 1.34% (6598.38)
प्राइवेट इक्विटी फर्म के के आर	= 2.32% (11367)
	17.12% (78561.75)

भारत की डिज़िटल पेमेंट सिस्टम् आधारित (डिज़िटल इण्डिया) दूरदर्शिता को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचाना गया है। गूगल ने फेडरल रिजर्व को सिफारिश की कि अमेरिका को भी भारतीय डिज़िटल पेमेन्ट सिस्टम अपनाना चाहिए। 1 दिसम्बर 2019 में इन्टरनेशनल सैटलमेन्ट बैंक ने भी कहा कि भारत के डिजिटल फाइनेंशियल ढाँचे में उभरते देशों के साथ अमीर देशों की अर्थ व्यवस्था को बदलने की क्षमता है। भारतीय मोबाईल फोन निर्माता कम्पनी लावा चीन से अपने ऑपरेशन्स को भारत शिफ्ट करेगी। (भास्कर 16 मई) कम्पनी के एम.डी. श्री हरिओम राय का कहना है कि कम्पनी देश में मोबाईल फोन मैन्युफेक्चरिंग ऑपरेशन्स को बढ़ाने पर अगले पाँच वर्षों में 800 करोड़ का निवेश करेगी।

नकारात्मकता में सकारात्मक यह है कि कोविड 19 के कारण उत्पन्न अनेक परेशानियों के मध्य कोविड ने भारत को धनी बनने का सुअवसर दिया है। जिसमें हमें निजीकरण की तरफदारी भी करनी पड़ सकती है। इस उभरती वैश्विक ललक को भारत किस तरह लेगा व उभरते अवसरों को कितने कौशल के साथ भुनाएगा, से भारत की आर्थिक विकास की दर काफी प्रभावित होगी।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 14 July 2020

जिनता भी बुरा हो कोराना, पर इसने हमें आईना दिखाया है कि जो मिला, जितना मिला, उसी पर संतोष करना सिखाया है

संसाधन हो या रिश्ते, सब पर कुछ पाबन्द लगाना है जो कुछ भी है मिला है, मिल बाँट के ही खाना है।

जिन्होंने संरक्षण के नाम पर सदा पंछियों, जानवरों को कैद किया है आज उन्हीं का अस्तित्व घरों में कैद पड़ा है।

सभी भाग रहे थे अंधाधुंध, सर पर पांव धरे कोरोना ने जरा ठोकर क्या लगाई, औंधे मुंह जा पड़े।

मोटर जरूरी, रेल जरूरी, कारखाने जरूरी, कह बहुत प्रदूषण फैलाया है अब एक ही झटके में सब पर ताले लगवा, ''बलवान हूँ मैं'' प्रकृति ने समझाया है।

चंद दिनों या फिर हफ्तों में कोरोना तो चला जायेगा परन्तु क्या भारत वर्ष अपनी गिरती हुई अर्थव्यवस्था को संभाल पायेगा।

पर इस मुश्किल के दौर में जिस देश ने हमें संभाला है, उसे सबल और सुदृढ़ पुनः हमें ही बनाना है

तू अपनी मेहनत और हाथों पर क्यों शक करता है अपने देश में बनी चीजों को हल्की क्यों समझता है

अपनी बनी चीजों में, अपने देश के मिट्टी की महक है अब तो बस तुझे अपने .फर्ज निभाना है, इस महक को ही जन्नत बनाना है।

शब्दावली

1. कॉशन फटीग नार्थ वेस्टर्न यूनिवर्सिटी में सायकियाट्री की प्रोफेसर जैकलीन गोलन ने इस व्यवहार को नाम दिया 'कॉशन फटीग' अर्थात जब आप एहतियात बरतते–बरतते थक जाएँ और अचानक नियम तोड़ने लगें।
2. ग्रो बैग्स– मौटे कपड़े से बनी क्यारियां/ गमले।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 14 July 2020

3. ए.आर.वी. आरसाफ्टवेयर–Augmented reality and virtual reality ऑगमेंटेड रियलिटी का मतलब किसी भी चीज को बढ़ाकर या बेहतर बनाकर दिखाना होता है। Virtual Reality एक ऐसा आर्टिफिशियल वातावरण जिसे की साफ्टवेयर और कुछ खास हार्डवेयर की मदद से बनाया जाता है जिससे की यूजर को वह आर्टिफिशियल वातावरण पूरी तरह से असली लगे।
4. पचेंचिजंग मैनेजर्स इंडेक्स (PMI) - पीएमआई विनिमार्ण और सेवाओं दोनों क्षेत्रों में व्यापार गतिविधि का संकेतक है। यह एक सर्वेक्षण–आधारित सूचकांक मापन है, जो उत्तरदाताओं से उनके पिछले कुछ महीनों के महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक बदलावों के बारे में जानकारी लेता है। विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों के लिए इसकी अलग से गणना की जाती है और फिर समग्र सूचकांक का निमार्ण किया जाता है।
5. एम.एस.एम.ई (MSME) - सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उधम को संक्षिप्त रूप में एम एस एम ई कहा जाता है। सरकार द्वारा चलाई जा रही सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए उद्योग को एम एस एम ई रजिस्ट्रेशन होना अनिवार्य होता है।

संदर्भ सूची –

- दैनिक भास्कर
- हिन्दुस्तान टाइम्स
- द टाइम्स ऑफ इन्डिया

वेबसाइटें –

https://www.who.int
https://www.cdc.gov
https://m.economictimes.com
https://www.nytimes.com

****

Copyright @ 2020 Authors